शोध मंथन Vol. XV No.I Jan.-Mar.2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

भारतीय समकालीन कला मे अवनींद्र नाथ टैगोर का योगदान

प्राप्तिः 14.03.2024
स्वीकृतः 25.03.2024

19

डॉ० ओम प्रकाश मिश्रा
प्राचार्य
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉज
देहरादून (उत्तराखण्ड)
ईमेलः *mishraop200@gmail.com*

शुभम रॉय
शोधार्थी
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉज, देहरादून (उत्तराखण्ड)

सारांश

भारतीय कला का इतिहास अत्यंत प्राचीन है जो कि हजारों सालों से भारतीय चित्रकला की जा रही है आज के इस युग में जिस तेजी से समय आगे बढ़ रही है और समय के साथ–साथ परिवर्तन भी हो रहा है स कला के प्रति लोगों का नजरिया अब बहुत बदल गया है जो कि कला बहुत प्राचीन काल से चली आ रही है कला ने एक बहुत लंबा सफर तय कर लिया है आज के समय में विज्ञान के माध्यम से कला में काफी परिवर्तन आई है समकालीन कला भी इसी बदलाव का परिणाम है स आज के समय में विज्ञान बहुत ही तेजी से आगे चल रहा है। इसी के माध्यम से कला भी भिन्न–भिन्न प्रकार में विकसित हो गए हैं नए–नए साधन, विधियाँ प्रदान की है और इसी चीजों का उपयोग कला में विभिन्न प्रकार से किया जाने लगा है जिससे कला भी भिन्न–भिन्न रुपों से प्रकट होने लगी है जैसे कि प्राचीन काल में कला को हाथों द्वारा बनाया करते थे स आज भी हाथों से करते है लेकिन अब विज्ञानी द्वारा बनाई गई मशीनों की तकनीक से कला को मशीनों से छापा और बनाया जाता है और डिजिटल कला करने लगे हैं स आज के नए कलाकार नए–नए विधियों से नए–नए कला बना रहे हैं स नए–नए सामाग्री भी बनने लगे हैं कलाकारों के लिए स भारतीय कला में हुए अदभुद परिवर्तन ने आज कला को एक नये आयाम पर पहुचा दिया है स नए–नए समय के साथ नए–नए कलाकारों द्वारा नए–नए शैलियां विकसित हुई और इसी तरह नए–नए माध्यम और तकनीक का प्रयोग करते–करते भारतीय कला में हुए परिवर्तनों में आज कला को एक नए आयाम पर पहुचा दिया है। जिसमें कला में आए इस परिवर्तन की लहर का एक सकारात्मक परिणाम यह है की समकालीन कला भारतीय कलाकारों का जन्म हुआ जिसमें अवनींद्र नाथ टैगोर का कला में अद्‌भुत व अतुलनीय योगदान रहा है जिन्होंने कला के क्षेत्र में ख्याति अर्जि तर्जि की और अपनी पहचान बनाई।

मुख्य बिन्दु

यथार्थवादी, आधुनिक कलाकार, कला, समकालीन, सामाजिक।

अवनींद्रनाथ टैगोर का जन्म बंगाल के जोडसांको नामक स्थान पर 7 अगस्त 1871 में जन्माष्टमी के दिन हुआ था। उनके दादा का नाम गिरिन्द्रनाथ टैगोर था। इनके बड़े भाई गगेंद्रनाथ टैगोर थे। इनके बड़े भाई गगेंद्रनाथ व दादा गिरिन्द्रनाथ टैगोर दोनों चित्रकार थे। अवनी बाबू गुरु रविंदरनाथ टेगौर के भतीजे थे। प्रख्यात कलाकार गगनेंद्रनाथ टैगोर के छोटे भाई होने के नाते, अवनींद्रनाथ का परिचय उनके जीवन में ही कला से हो गया था। चूँकि वह प्रसिद्ध टैगोर परिवार के बीच बड़े हुए, कला और साहित्य हमेशा उनके बचपन का हिस्सा थे और अनिवार्य रूप से उनमें इनके प्रति रुचि विकसित हुई।

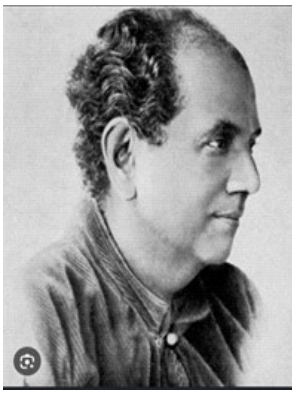

1880 में उन्होंने संस्कृत कॉलेज में अध्ययन के दौरान कला सीखी। 1890 में अबनि बाबू ने कलकत्ता स्कूल ओफ आर्ट एंड क्राफ्ट में प्रवेश लिया। जहां अपने पेस्टेल कलर ओ घिलरडी (O Ghilardi) से सीखे तथा ओयल कलर (तैलिय चित्रण) सी पामर (C Palmer) से सीखा। ये दोनों यूरोपीयन चित्रकार उस कॉलेज में शिक्षक थे। अवनींद्रनाथ टैगोर ने सुहासिनी देवी से 1889 में विवाह किया।

जब वह कोलकाता के संस्कृत कॉलेज में पढ़ रहे थे, तभी उन्होंने कला की बारीकियां सीखनी शुरू कर दीं। 1889 में अपनी शादी के बाद, उन्होंने संस्कृत कॉलेज छोड़ दिया, जहाँ वे पिछले नौ वर्षों से पढ़ रहे थे, और सेंट जेवियर्स कॉलेज में शामिल हो गए और डेढ़ साल तक अंग्रेजी का अध्ययन किया। इसके बाद उन्होंने वर्ष 1890 में प्रसिद्ध कलकत्ता स्कूल ऑफ आर्ट में दाखिला लिया। वहाँ उन्हें यूरोपीय कलाकारों, ओ. गिलार्डी और चार्ल्स पामर द्वारा प्रशिक्षित किया गया। जबकि उन्होंने गिलार्डी से पेस्टल के उपयोग में महारत हासिल करना सीखा, उन्होंने चार्ल्स से तेल चित्रकला पर गहन ज्ञान प्राप्त किया। 1897 के आसपास, उन्होंने गवर्नमेंट स्कूल ऑफ आर्ट के उप–प्रिंसिपल से विभिन्न तकनीकें सीखीं, जिनमें यूरोपीय चित्रकला में उपयोग की जाने वाली तकनीकें भी शामिल थीं। तभी उनमें जलरंग के प्रति विशेष रुचि विकसित होने लगी।

प्रशिक्षण के दौरान, अवनींद्रनाथ मुगल कला के प्रभाव में आये। फिर उन्होंने भगवान कृष्ण के जीवन पर आधारित कुछ खूबसूरत पेंटिंग बनाना शुरू किया, जिसमें मुगल शैली का गहरा प्रभाव झलकता था। जब उन्हें कलकत्ता स्कूल ऑफ आर्ट में इस्तेमाल की जाने वाली शिक्षण शैली के साथ कुछ समस्याएं थीं, जहां पश्चिमी मॉडल का प्रभाव प्रमुख था, तो उन्होंने ईबी हैवेल से मुलाकात की और उन्हें भारतीय कला में भारतीय तत्वों को बनाए रखने के महत्व के बारे में बताया। इससे स्कूल में पढ़ाने के तरीके में बदलाव का रास्ता साफ हो गया। जौरासांको में विदेशी कालाकारों को भी आमंत्रित किया जाता था। वह तत्कालीन कला व सांस्कृतिक आदान–प्रदान का प्रमुख केन्द्र था। 1903 ई. में आमंत्रित जापानी चित्रकारों ओकाकारा काकुजो (Okakara Kakuzo), हिशिदा (Hishida) तथा वाई. तैकान (Y- Taikan) से प्रभावित होकर आपने जापानी चित्रकला तत्त्वों का समावेश भी अपनी कला में किया। आपने निजी तकनीक के साथ जापानी वॉश तकनीक को संश्लेषित कर नया

प्रयोग किया। यह तकनीक जापानी दौश तकनीक से कुछ भिन्न थी। चित्र का प्रारम्भ भूरे रंग के रेखांकन से कर उसे एक बार पानी से भिगो देते थे। तत्पश्चात् रंग भरते थे। चित्र पूर्ण होने से कुछ पहले उसे पुनः पानी से भिगो कर सपाट ब्रश फिरा देते थे जिससे अतिरिक्त रंग निकल जाते थे तथा सभी रंग एक दूसरे में मिलकर एक धुंधला सामंजस्य उत्पन्न करते थे। इस प्रक्रिया के पश्चात् चित्र को आवश्यकतानुसार रंग लगाते हुए रेखांकन द्वारा अन्तिम रूप देते थे। यही वॉश तकनीक बंगाल स्कूल की पहचान है।

गणेश जननी – वर्ष 1908 में चित्रित, 'गणेश जननी' में भगवान गणेश की उनके बाल रूप की छवि को दर्शाया गया है। भगवान को एक पेड़ की शाखा पर लटककर खेलते हुए देखा जाता है जबकि उनकी माँ के चेहरे पर चिंता के भाव हैं।

बुद्ध की विजय – 'बुद्ध की विजय' में ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध के चित्र को दर्शाया गया है। यह मानवीय पीड़ाओं से संबंधित बुद्ध के अंतिम प्रश्न का भी उत्तर देता है।

भारत माता – यह खूबसूरत पेंटिंग वर्ष 1905 में बनकर तैयार हुई थी। इस पेंटिंग में भारत माता को दर्शाया गया है। उसे चार हाथों के रूप में चित्रित किया गया है, जिसके प्रत्येक हाथ में महत्वपूर्ण तत्व हैं। यह पेंटिंग भारतीय परंपरा को दर्शाती है।

शाहजहाँ का निधन – यह सीधे तौर पर मुगल सम्राट शाहजहाँ के अंतिम दिन का दृश्य है। तस्वीर में शाहजहाँ को अपनी मृत्यु शय्या पर लेटे हुए, ताज महल का अंतिम दृश्य देखने की कोशिश करते हुए दिखाया गया है, जो उसका अंतिम विश्राम स्थल होगा।

वस्तुतः अवनीन्द्रनाथ की कला का मूल्यांकन तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में करना चाहिये। दिल्ली व पटना की तत्कालीन हासशील कला शैलियों की अलंकरण बहुलता का परित्याग करने के साथ ही यूरोपीय कला के सम्मोहक यथार्थवाद से मुक्ति पाना आपकी कला का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष था। चित्रों में सहज, सरल, स्वभाविक विश्वासों को उतारना तथा मानव मन की गहराइयों में उतर कर सूक्ष्मतम भावाभिव्यक्ति ही आपकी कला का लक्ष्य था। आपकी कला का सर्वश्रेष्ठ अवदान भारतीय कला, उसके इतिहास व गौरव को समझना तथा प्राचीनता व नवीनता का सामंजस्य करके अभिव्यक्ति को सबल और समयानुकूल बनाना था। आपने पूर्ण सशक्तता से कला के विभिन्न पहलुओं पर दृष्टिपात करके एक समन्वयशील पथ अपनाया था। आपमें एक युगदृष्टा कलाकार की जागृति, महान सृजक की चेतना और साधक समान समन्वयता व अनन्यता थी। आपने

देश की कला चेतना को पुनः जागृत कर एक नवीन युग का समारम्भ किया। अवनीन्द्रनाथ भारतीय एवं यूरपीय कला के एक ऐसे संगम थे जिन्होंने भारतीय कला को एक नवीन मार्ग प्रदान किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में ''उन्होंने देश को आत्महीनता के पाप से बचाया है और उसे निराशा के गर्त से निकालकर वह सम्मानपूर्ण पद प्राप्त करवाया है जो अधिकार से उसका था। भारत की कलात्मक चेतना के उत्थान से देश में एक नये युग का आरम्भ हो रहा है। इस प्रकार अवनीन्द्र के प्रयास से बंगाल को देश में एक गौरवपूर्ण सम्मान प्राप्त हो रहा है।'' आलोचना–समालोचना के पश्चात भी सत्य है कि अवनीन्द्रनाथ तथा उनके शिष्यों ने समाप्त होती भारतीय कला को स्फूर्ति प्रदान की तथा तत्कालीन भारतीय आधुनिक कलाकारों को विदेशी कला को समझने व भारतीय संस्कृति की रक्षा करते हुए चित्रकला में मौलिकता का एक नवीन मार्ग प्रशस्त किया।

आपने जयपुर व पटना के भित्ति चित्रकारों के साथ भी कार्य किया जिसका श्रेष्ठ उदाहरण कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स, कोलकाता में सुरक्षित 'कच देवयानी' नामक भित्ति चित्र है। 1940 ई. के बाद आपने खिलौनों का निर्माण अधिक किया। जीवन के अन्तिम दौर में विपरीत परिस्थितियों तथा अमूल्य कलाकृतियों के तितर–बितर होने पर भी कला सष्जन निर्वाध व निर्द्वन्द्व चलता रहा। इस समय आपने लकड़ी को तराश कर जानवरों की मुखाकृतियाँ तथा खिलौने भी बहुत बनाये। आपका सम्पूर्ण कला सृजन आपके व्यक्तित्व के विभिन्न रूपों, मौलिक सृजना, तकनीकी कुशलता तथा अद्भुत, नवीन व निजी शैली का प्रतिबिम्ब है। आपके शिष्यों में– नन्दलाल बोस, असित कुमार हल्दार, क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार तथा शैलेन्द्र डे ये चार स्तम्भ प्रमुख थे।

अवनीन्द्रनाथ अपनी सबसे छोटी पुत्री सोवा की दारुण मृत्यु के पश्चात् अत्यन्त संवेदनशील हो गये थे। इस समय की आपकी कृति शाहजहाँ इन हिज डेथ बेड (Shahjahan in his death bed) श्रेश्ठ कृति (डेंजमत चमंबम) मानी जाती है जिसमें आपने अपने दुःख को बादशाह की आँखों में उतारा। रवीन्द्रनाथ की मष्त्यु पर बनाई आपकी कृति 'लास्ट जर्नी' (Last Journey) भी अत्यन्त मार्मिक है। वस्तुतः आपका सम्पूर्ण कला सृजन आपके व्यक्तित्व के विभिन्न रूपों, सृजन क्षमता, हंसमुख स्वभाव, तकनीकी कुशलता, राष्ट्रीय भावना, संवेदनशीलता तथा कलाप्रेम से ओतप्रोत अद्वितीय शैली का दर्पण है।

संदर्भ

1. सारखलकर, वि.र. (2014). आधुनिक चित्रकला का इतिहास राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जुलाई. अध्याय - 18 भारत एवं आधुनिक कला अवनीन्द्रनाथ टैगोर. पृष्ठ **314.**
2. चतुर्वेदी, डॉ० ममता. (2016). समकालिन भारतीय कला. हिन्दी ग्रन्थ अकादमीः राजस्थान. अक्टूबर।
3. culturalindia-net.
4. mueenakhtar-com.
5. commons-wikimedia-org.